गज़ल गायन शैली ''सांगीतिक विश्लेषण''

***डॉ0 रेखा साह**

गजल गायन की परम्परा लगभग 500 वर्ष पुरानी है। आरम्भ में गजल कव्वालों के द्वारा ही गाई जाती थी परन्तु बाद में गजल गायक स्वतंत्र रूप से स्थापित हुए। वर्तमान तक गजल गायन एक लम्बी सांगीतिक यात्रा पूरी कर एक लोकप्रिय गायन शैली के रूप विद्यमान है जिसका आनन्द संगीत मर्मज्ञ एवं सामान्य श्रोता जो कि संगीत के जानकार नहीं भी हैं, आनन्द लेते हैं। गजल एक उर्दू एवं फारसी की काव्य रचना है जिसको विशिष्ट स्वर तथा लय व्यवहार के साथ एवं संगीत वाद्यों की संगति के साथ प्रस्तुत किया जाता है इसी स्वर लय एवं ताल व्यवहार से गजल गायन शैली एक विशिष्ट शैली के रूप में विद्यमान है। गजल गायन शैली का संगीतात्मक विश्लेषण किसी आलेख के रूप में प्राप्त नहीं होता है अतः प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा गजल गायन का संगीतात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। यह अध्ययन प्रतिष्ठित गजल गायकों की उपलब्ध रिकार्डिग के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गजल गायन शैली का संगीतात्मक विश्लेषण है जिसमें गजल गायन में प्रयोग होने वाले स्वरों का विशेष प्रयोग तथा लय व ताल के व्यवहार का अध्ययन किया जाएगा।

संगीत की उत्पत्ति वेदों के रचयिता ब्रह्माजी द्वारा हुई। दामोदर पंडित ने अपने ग्रन्थ संगीत दर्पण में उक्त मत को निम्न श्लोक द्वारा प्रस्तुत किया–

द्रुहिणेत यदन्विष्ट प्रयुक भरतेन च।
महादेवस्य तुरतस्तन्मार्गारव्य विमुक्तदम।

अर्थात् द्रुहिणेत (ब्रह्मा) ने जिस संगीत को शोध कर निकाला, भरत मुनि ने महादेव के समक्ष जिसका प्रयोग किया तथा जो मुक्ति दायक है वही मार्गी संगीत है। (पृ0– 12 संगीत विशारद, लक्ष्मी नारायण गर्ग)

संगीत का प्रयोजन मुख्यतः आध्यात्मिक तथा धार्मिक ही रहा है परन्तु बाद में इसको मनोरंजन हेतु भी प्रयोग किया जाने लगा। संगीत का सन्दर्भ सामवेद से सामगान के रूप में प्राप्त होता है जिसमें स्वर–लय का निश्चित प्रयोग किया जाता था उसके पश्चात संगीत के विकास के साथ संगीत में विभिन्न शैलियाँ, प्रबन्ध ध्रुपद–धमार, ख्याल, कव्वाली, गजल, ठुमरी, दादरा तथा भजन आदि प्रचार में आयीं। संगीत शैली की विशेषता उसकी संगीत रचना तथा इसके विशिष्ट प्रयोग पर आधारित होती हैं, इसी आधार पर विभिन्न संगीत शैलियाँ स्थापित हुई। संगीत की विभिन्न शैलियों का विवरण संगीत के इतिहास से प्राप्त होता है। संगीत की शिक्षण शैली श्रुत परम्परा पर आधारित रही है अतः इन शैलियों के क्रियात्मक पक्ष के सन्दर्भ प्राप्त नहीं होते हैं। प्रस्तुत पत्र गज़ल सांगीतिक पक्ष पर आधारित है जिसका सांगीतिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

गज़ल एवं कव्वाली दोनों का ही इतिहास वर्तमान में प्रचलित ख्याल गायन शैली से भी पुराना है। इन दोनों ही शैलियों का सम्बन्ध मुस्लिमों के भारत में प्रवेश के साथ है। आचार्य वृहस्पति के अनुसार काजी हमीमुद्दीन नागोरी के कव्वाल महमूद ने सुल्तान शमसुद्दीन इल्तुमिश (1210–1235 ई0) को गज़ल गाकर मुग्ध किया था। गयासुद्दीन बलवन (1265–1287 ई0) के पुत्र मुहम्मद ने शैख बहाउद्दीन जकरिया के पुत्र शैख कदवा को अपनी सभा में आमंत्रित किया था, उस समय अरबी गज़लें गाई गई थी (पृष्ठ 57, मुसलमान और भारतीय संगीत आचार्य वृहस्पति)। ककुबाद (1287–1290) के युग में तो गली–गली गज़ल गायक उत्पन्न हो गये थे। जलालुद्दीन खिजली के युग में अमीर खुसरो रूपवती गायिकाओं और सुन्दर किशोरी की छवि का वर्णन अपनी गज़लों में करते थे (पृष्ठ– 58 मुसलमान और भारतीय संगीत आचार्य–

*संगीत विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

वृहस्पति)। अल्लाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई0) के युग के महमूद मुहम्मद एवं खुदादी प्रसिद्ध गज़ल गायक थे (पृष्ठ 59, मुसलमान और भारतीय संगीत आचार्य वृहस्पति)।

कुतुबुद्दीन खिलजी (1316–1320 ई0), गयासुद्दीन तुग्लक (1320–1325 ई0) और मुहम्मद तुग्लक (1325–1351 ई0) के युग में भी गज़ल लोकप्रिय थी। फिरोज तुग्लक (1351–1388 ई0) के युग में भी गज़ल का सम्मान था (पष्ठ 60–61 आचार्य वृहस्पति)।

सन् 1535 ई0 में बैजू ने हुमायूँ को फारसी गज़ल गाकर रिझाया था। अकबर का संरक्षक बैरम खाँ रामदास की गज़लों की शैली पर मुग्ध था। बैजू और रामदास जैसे कलावन्तों का प्रभूत अधिकार गज़ल गाने पर ही था (आचार्य वृहस्पति, मुसलमान, गज़ल, कव्वाली, ख्याल निबन्ध संगीत, पृष्ठ– 35)।

उपरोक्त ऐतिहासिक तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि गज़ल गायन की शैली अन्य शैलियों ध्रुपद–धमार तथा ख्याल से भी पूर्व की है। अल्लाउद्दीन खिलजी युग में अमीर खुसरो द्वारा कव्वाली तथा गज़ल गायन का प्रचार किया गया। अल्लाउद्दीन खिलजी के समय में ही अमीर खुसरो ने फारसी कवि एवं संगीतज्ञ के रूप में प्रसिद्धी प्राप्त की थी। अमीर खुसरो द्वारा फारसी तथा उर्दू में कई गज़लों की रचना की तथा कव्वाली शैली को भी संगीत में सम्मानजनक स्थान दिलाया।

अमीर खुसरो का भारतीय संगीत में अनुपम योगदान रहा है। जिसमें उन्होंने कई नये राग एवं साज अन्वेषित कर उनको प्रचार में लाये। तराना शैली भी अमीर खुसरो की ही देन है। ऐसी मान्यता है कि गोपाल नायक के गान के शब्द अमीर खुसरो पूरी तरह नहीं समझ पाये थे इसलिए उन्होंने तोम, नोम, दीम, तन आदि शब्दों का प्रयोग कर गोपाल नायक के संगीत की नकल प्रस्तुत की थी। लोदी काल में भी गज़ल, कव्वाली का प्रचार था। बाबर के समय में भी यही सिलसिला जारी रहा तथा इसी काल में (1458–1499 ई0) जौनपुर के बादशाह सुल्तान हुसैन शर्की ने ख्याल गायन का आविष्कार किया तथा नवीन रागों की रचना कर संगीत को और अधिक समृद्ध बनाया। राजा मानसिंह तोमर ने ग्वालियर पर (1486–1516 ई0) राज किया तथा इनको ही ध्रुपद शैली का प्रवर्तक माना जाता है। अकबर के काल में संगीत की सभी शैलियाँ पल्लवित एवं पुष्पित हुई। अकबर का पुत्र जहाँगीर कला तथा साहित्य से विशेष अनुराग रखता था। जहाँगीर फारसी भाषा में गज़ल लिखा करता था तथा लिखने के पश्चात वह अपनी पत्नी नूरजहाँ को सुनाया करता था और जब नूरजहाँ को गज़ल पंसद आ जाया करती थी तो जहाँगीर स्वयं ही उनको गाया करता था। गज़ल एक लम्बी ऐतिहासिक यात्रा तय करके वर्तमान में अत्यधिक लोकप्रिय गायन शैली के रूप में विद्यमान है परन्तु इसकी गायन शैली के सन्दर्भ प्राप्त नहीं होते हैं।

गज़ल एक अरबी फारसी तथा उर्दू भाषा की काव्य रचना है यह पाँच तथा सात शेरों का संकलन है शेर दो पंक्तियों की कविता है जिसकी प्रत्येक पंक्ति एक निश्चित तुकबन्दी से समाप्त होती है जिसको काफिया रदीफ कहते हैं। शेर हिन्दी काव्य के दोहा तथा अंग्रेजी भाषा काव्य के Couplet के समान होता है। प्रत्येक शेर का भाव स्वतंत्र होता है। गज़ल का प्रथम शेर 'मत्ला' कहलाता है तथा अन्तिम शेर जिसमें रचनाकार अपना उपनाम भी डालता है उसे 'मक्ता' कहते हैं और मक्ते से ही गज़ल समाप्त होती है। गज़ल अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ प्रेमपात्र से वार्तालाप। इसके रचनाकर को शायर कहा जाता है।

गज़ल का प्रयोग मुशायरों में तथा संगीत कार्यक्रमों में होता है। मुशायरों में गज़ल को प्रथम बार उसी शायर द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जिसने दूसरी रचना की हुई होती है तथा शायर अपनी गज़ल को सामान्य कविता के रूप में तथा स्वरबद्ध करके अर्थात् तरन्नुम में प्रस्तुत करते हैं जिसमें किसी प्रकार के संगीत वाद्यो का प्रयोग नहीं किया जाता है। संगीत कार्यक्रमों में कलाकारों द्वारा विभिन्न शायरों की गज़लों को एक विशिष्ट शैली में संगीत वाद्यों की संगत के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इस सन्दर्भ में उमेश जोशी अपनी पुस्तक भारतीय संगीत का इतिहास में इस प्रकार विलर्ड साहब के मत को प्रस्तुत करते हैं। गज़ल अरबी भाषा का शब्द है गज़ल प्रणय विषयक कविता है जिन रागों में टप्पे होते हैं अधिकतर उन्हीं रागों में गज़ल के गीत होते हैं। (पृष्ठ– 239, भारतीय संगीत का इतिहास– उमेश जोशी)

गज़ल गायकों के द्वारा गज़लें सामान्य वर्ग में प्रचलित होकर अमर हो जाती है क्योंकि गज़ल को पढ़ने वाले सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं गज़ल गायक का यह प्रयास रहता है कि वह शायर के निहित भावों को स्वरों के माध्यम से प्रस्तुत करें इसलिए अगर सम्भव हो तो गायक गज़ल के विषय में शायर से मशवरा भी करते हैं। गज़ल गायक के लिए यह आवश्यक है कि वह जिस भाषा में गज़ल लिखी गई है उस भाषा को भली भाँति समझता भी हो। गज़लें पूर्व में अरबी एवं फारसी भाषा में लिखी गई परन्तु अमीर खुसरो ने गज़लों को उर्दू भाषा में भी लिखकर जन सामान्य में प्रचलित कराया। अमीर खुसरो के बाद विभिन्न शायरों की एक लम्बी सूची है जिनकी गज़लों को उस समय के शायरों द्वारा मशहूर किया गया तथा वर्तमान में भी गज़लों को गाया जा रहा है और वर्तमान में गज़ल एक लोकप्रिय विधा के रूप में विद्यमान है।

गज़ल गायन शैली के सम्बन्ध में कोई विशेष तथ्य प्राप्त नहीं होते हैं जिससे कि यह समझा जा सके कि गज़ल में स्वर, लय एवं ताल व्यवहार क्या रहता है। गज़ल गायकों ने अपने पूर्व में अपने गायकों का अनुसरण कर तथा उसमें व्यक्तिगत छाप डालकर ही गज़ल प्रस्तुत की। पूर्व में ध्वन्यंकन की सुविधा भी नहीं थी। अतः गज़ल गायकी का सांगीतिक विश्लेषण उपलब्ध रिकार्डिंग के आधार पर ही सम्भव है। अतः इस पत्र में यही प्रयास प्रस्तुत किया जाएगा।

संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुत होने वाली गज़ल संगीत की एक विशिष्ट शैली है। संगीत को संगीतकारों द्वारा शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत तथा लोक संगीत की शैलियों में वर्गीकृत किया गया है। शास्त्रीय संगीत राग एवं लय–ताल शास्त्र पर आधारित है जिसके अन्तर्गत वर्तमान की ध्रुपद–धमार, ख्याल एवं तराना शैली आती है। इन शैलियों में शास्त्र का तथा शैली के अनुशासन का विशेष ध्यान रखा जाता है। उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ठुमरी, दादरा आदि शैलियाँ आती हैं जिसमें शास्त्र के नियमों का भाव व्यक्त करने हेतु छूट ले ली जाती है। यह भाव प्रधान शैली है। सुगम संगीत के अन्तर्गत वे शैली आती हैं जिनको सुगमता से प्रस्तुत किया जाता है एवं श्रोताओं को भी आनन्द लेने में किसी प्रकार का मानसिक तनाव न हो। वैसे तो संगीत की किसी भी शैली में श्रोताओं को मानसिक तनाव का आभास नहीं होना चाहिए। संगीत का प्रयोजन शान्ति एवं मनोरंजन प्रदान करना होता है। सुगम संगीत के अन्तर्गत गज़ल, भजन एवं गीत (हिन्दी) आते हैं। सुगम संगीत के इस वर्गीकरण को आकशवाणी द्वारा भी मान्यता प्राप्त है। प्रस्तुत पत्र सुगम संगीत की गज़ल गायकी पर आधारित है।

के0 वासुदेव शास्त्री के अनुसार त्रयस्य जाति में गज़ल नामक पाँच मात्राओं के ठेके से युक्त रूपक ताल में रची हुई चीज का नाम गज़ल है (पृष्ठ 244 संगीत शास्त्र– के0 वासुदेव शास्त्री)। के0 वासुदेव शास्त्री की युक्ति वर्तमान में प्रचलित गज़ल गायकी पर सही नहीं उतरती क्योंकि प्रचलित रूपक ताल सात मात्राओं की होती है। गज़ल गायन शैली के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु गज़ल गायकों द्वारा गायी गज़लों का आधार लेना ही उचित होगा। गज़ल गायकी के क्षेत्र में अख्तरी बाई फैजाबादी एक मील का पत्थर थीं जिन्होंने गज़ल गायकी को एक नया आयाम प्रदान किया। अख्तरी बाई फैजाबादी ही बाद में बेगम अख्तर के नाम से प्रसिद्ध हुई। जौहरा बाई अम्बाला वाली, शमशाद बेगम, इकबाल बानो, रूना लैला (बाग्लादेश), नूरजहाँ, फरीदा खानम (पाकिस्तान) आदि का नाम गज़ल गायकी में प्रसिद्ध हुआ।

प्रसिद्ध ठुमरी गायक मौजुद्दीन ठुमरी के साथ–साथ गज़ल को भी अधिकार के साथ प्रस्तुत किया करते थे। इन्हीं सब से प्रेरणा पाकर भारत एवं पाकिस्तान में गज़ल गायन प्रचलित हुआ। उस समय के सभी गज़ल गायकों की पष्ठभूमि शास्त्रीय संगीत ही हुआ करती थी तथा सभी ठुमरी, दादरा एवं गज़ल बड़ी दक्षता के साथ प्रस्तुत किया करते थे। पाकिस्तान के मेहदी हसन, गुलाम अली, परवेज मेहदी गज़ल गायकों के रूप में प्रसिद्ध हुए तथा हिन्दुस्तान में चन्दन दास, हरि हरन, जगजीत सिंह, भूपेन्द्र, शान्ती हीरानन्द, राजकुमार रिज़वी, अहमद हुसैन–मुहम्मद हुसैन, पंकज उदहास आदि प्रतिष्ठित गज़ल गायक हैं। इन सभी की रिकार्डिंग भी उपलब्ध है। इसी के आधार पर गज़ल गायन शैली का अध्ययन प्रस्तुत है।

गज़ल की रचना मध्यलय की कम मात्राओं की तालें जैसे कहरवा, दादरा तथा रूपक आदि में की जाती है। पूर्व में कहा गया है कि जिन रागों में टप्पे गाये जाते थे उन्हीं रागों में गज़लों की रचना की जाती थी परन्तु गज़ल गायन में राग की बन्दिश नहीं है। संगीत रचना शुद्ध अथवा रागों को मिश्रित कर दोनों ही प्रकार से की जाती है जो कि गज़ल के

भाव पर निर्भर करती है। गज़ल के 'मत्ले' को स्थाई तथा अन्य शेरों को अन्तरा की भाँति व्यवहार में लाया जाता है प्रत्येक शेर के पश्चात मत्ला गाने की परम्परा है।

गज़ल के मत्ले को विभिन्न प्रकार के स्वर समुदाय से सुसज्जित कर प्रस्तुत किया जाता है प्रत्येक भाव को स्वर द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास रहता है। मत्ले को पेश करने के पश्चात संगतकर्ता मत्ले एवं शेर के बीच के अन्तराल को संगीत द्वारा भरते हैं। गज़ल में मुख्य रूप से संगत सारँगी एवं तबले पर की जाती है तथा हारमोनियम गायक कलाकार अपने स्वर सहयोग के लिए प्रयोग करता था परन्तु बाद में गज़ल गायन में गिटार, बाँसुरी, सन्तूर, वायलन तथा सितार आदि का प्रयोग भी किया जाने लगा है जो कि अनावश्यक है। सारँगी की संगत गज़ल गायन में अनुरूप वातावरण प्रस्तुत किया करती थी। बेगम अख्तर ने अपने साथ केवल सारँगी तथा तबले की संगत ही रखी थी। यद्यपि वे सदैव हारमोनियम लेकर बैठती थीं जो कि मात्र स्वर सहयोग के लिए रहता था। गज़ल गायन में सारँगी तथा तबला वादक को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का पूर्ण अवसर रहता है। अच्छे सारँगी एवं तबला वादक गज़ल गायकी में चार चाँद लगा देते है। गज़ल गायन में तबला वादक की भूमिका भी विशेष रहती है। प्रत्येक शेर के बाद तबला वादक तबले में लग्गी एवं लड़ी का प्रयोग करता है तत्पश्चात तिहाई लगाकर अपना वादन समाप्त करता है। तबला वादक की लग्गी, लड़ी के साथ गायक मत्ला ही गाता है यही क्रम गज़ल गायन के अन्त तक रहता है। गज़ल गायन का समापन मक्ते के साथ किया जाता है जो कि गज़ल का अन्तिम शेर होता है। बेगम अख्तर से पूर्व की गायिकाएँ मत्ले के बाद के शेर की पहली लाइन को बिना ताल के बोल आलाप के रूप में प्रस्तुत करती थी तथा शेर की दूसरी लाइन में तबला वादक ताल पकड़ कर लग्गी, लड़ी प्रस्तुत करता था। इस शैली में बेगम अख्तर ने भी गज़लें गाई हैं परन्तु वर्तमान में यह शैली विलुप्त हो गई है तथा मत्ले के बाद के पूरे शेर को ही ताल के साथ गाने की प्रथा आरम्भ हो गई। बेगम अख्तर तथा उनके बाद के सभी गज़ल गायक बाद में प्रचलित शैली में ही गज़ल गायन प्रस्तुत करते हैं। गज़ल की संगीत रचना अधिकतर राग पर आधारित रहती है। बेगम अख्तर पटियाला घराने के उस्ताद अता मुहम्मद खाँ तथा किराना घराने की उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ की शिष्या थीं जिससे उन्होंने शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की थी। उनके गायन में पटियाला घराने की छोटी–छोटी मुर्किया एवं किराना घराने के लम्बे एवं ठहराव के आलाप का सुन्दर समन्वय था। बेगम अख्तर ठुमरी, दादरा, चैती आदि शैलियों के गायन को पूर्ण अधिकार से प्रस्तुत करती थी। अतः इनके गज़ल गायन पर भी इन शैलियों की झलक देखी जाती है। बेगम अख्तर को 'मलिकाएँ गज़ल' से भी नवाजा गया। गज़ल के बीच में आलाप तथा बोल आलाप पर तो इनकी ठुमरी गायन का प्रभाव दिखता है। ताल का प्रयोग इनकी गायकी में विशेष रूप से रहता है ताल में बेगम अख्तर अतीत एवं अनाघात का प्रयोग बड़ी दक्षता से करती थीं एवं बाद में वह ताल को बहुत सुन्दरता से पकड़ा करती थीं। इनके साथ तबले पर अधिकतर फरूखाबाद घराने के तबला वादक उस्ताद मुन्ने खाँ रहा करते थे। बेगम अख्तर सभी गज़ल गायकों की प्रेरणा स्त्रोत रहीं परन्तु इनकी गज़ल गायकी शैली को इनकी शिष्याएँ शान्ति हीरानन्द, रीता गांगुली, कमर जहान, अंजली बनर्जी ही प्रस्तुत कर पाई। इसकी तुलना में मेहंदी हसन एवं गुलाम अली की गायन शैली सुलभ है। इन दोनों कलाकारों का हिन्दुस्तान में जोर–शोर से अनुसरण किया गया। गुलाम अली ने तो अपनी गज़लों में सरगम तथा तानों का भी प्रयोग किया जिसकी आवश्यकता गज़ल गायकी में नहीं है। बेगम अख्तर, मेहदी हसन तथा गुलाम अली को गज़ल का स्तम्भ माना जा सकता है। बेगम अख्तर की गज़लों की संगीत रचना, संगीत निर्देशक खय्याम किया करते थे जबकि मेहदी हसन एवं गुलाम अली अधिकतर अपनी ही संगीत रचना गाया करते थे।

बेगम अख्तर, मेंहदी हसन, गुलाम अली, फरीदाखानम आदि की प्रसिद्ध गज़लों की सूची निम्नवत है जिनकी रिकार्डिग सुनी जा सकती है–

बेगम अख्तर

1. ऐ मुहब्बत तेरे अंजाम पै रोना आया
2. इश्क में गैरतें जज्बात ने रोने ना दिया

3. मेरे हम सफर मेरे हम नवा
4. वो जो हम में तुम में करार था
5. दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दें
6. उल्टी हो गई सब तस्वीरें
7. खुशी ने मुझको ठुकराया
8. जिक्र उस परवरिश का

फरीदा खानम

1. आज जाने की जिद ना करो
2. दिल जलाने की बात करते हो
3. वो इश्क जो हमसे रूठ गया

मेहदी हसन

1. देख तो दिल के जाँ से उठता है, ये धुवाँ सा कहाँ से उठता है
2. गुलों में रंग भरे बाद नो बहार चले
3. रंजिश ही सही दिल तो दुखाने के लिए आ
4. शोला हूँ जल चुका हूँ हवाएँ मुझे न दे
5. अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिले
6. मुहब्बत करने वाले कम न होंगे

गुलाम अली

1. मेरी नज़र से न हो दूर एक पल के लिए
2. दरीचा बे सदा कोई नहीं है
3. चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
4. हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली
5. ये दिल ये पागल दिल मेरा
6. चमकते चाँद को

गज़ल गायकी को संगीत कार्यक्रम के अतिरिक्त फिल्मों में भी भरपूर स्थान मिला। संगीत निर्देशक मदन मोहन को फिल्मी गज़लों का विशेषज्ञ माना जाता है। फिल्मों में गज़ल गायन के लिए पुरूष गायक के रूप में पहले तलत महमूद को ही पसन्द किया जाता था। महिला गायिकाओं में तो शमशाद बेगम, सुरैया, लता मंगेशकर, आशा भौसले एवं सुमन कल्याणपुर आदि सभी ने फिल्मों में गज़ल गाई हैं। फिल्मों में भी मुजरे के दृश्य में परम्परागत गज़ल शैली का प्रयोग किया गया फिल्म 'ममता' कि 'रहते थे कभी जिनके दिल में' एवं फिल्म 'जीवन मृत्यु' की 'जमाने में कभी ऐसे भी' लता मंगेशकर द्वारा प्रस्तुत गज़ल गायन शैली का उदाहरण है। कत्थक नृत्य में भी भाव प्रदर्शन हेतु गज़लों का प्रयोग किया जाता है।

गज़ल गायन इस प्रकार वर्तमान में अत्यधिक लोकप्रिय गायन विधा के रूप में प्रचलित है जिसका आनन्द सामान्य श्रोताओं से लेकर संगीत तथा उर्दू भाषा के ज्ञाता सभी लोग लेते हैं। वर्तमान में उर्दू भाषा में ही गज़लें लिखी तथा गायी जा रही हैं उर्दू भाषा का ज्ञान होने पर गज़ल गायन का भरपूर आनन्द लिया जा सकता है। सामान्य श्रोता गज़ल गायन में गायकी एवं इसके संगीत का आनन्द लेते हैं। वर्तमान में हिन्दी भाषा में भी गज़लें लिखी एवं गायी जा रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस, वर्ष– 1997, पृ0– 12।
2. वृहस्पति, आचार्य कैलाशचन्द्र देव, मुसलमान और भारतीय संगीत, राजकमल प्रकाशन, वर्ष– 1974, पृ0– 57–61।
3. वृहस्पति, आचार्य कैलाशचन्द्र देव, मुसलमान गज़ल कव्वाली ख्याल निबन्ध संगीत (लेख), संगीत कार्यालय हाथरस, वर्ष– 1974, पृ0– 35।
4. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोजाबाद आगरा, वर्ष– 1969, पृ0– 239।
5. शास्त्री, के0 वासुदेव, संगीत शास्त्र, प्रकाशन शाखा सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, वर्ष– 1998, पृ0– 244।